खण्ड-353, अंक-1
शुक्रवार, 25 पौष, शक संवत् 1903
(15 जनवरी, 1982 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 353 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)

1982

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	1-5
श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ ..	6
भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री सालिगराम जायसवाल, राम बचन यादव, गनेशी लाल चौधरी, गया प्रसाद मेहरोत्रा, अभय राम यादव, परमानन्द सिन्हा, ज्वाला प्रसाद सिन्हा, चन्द्रभान शर्मा, दुर्योधन प्रसाद, नर्वदेश्वर लाल, धर्मचन्द्र मिश्र तथा श्री मेहरबान सिंह के निधन पर शोकोद्गार ..	6-11
विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री आत्मा राम गोविन्द खेर के निधन पर शोकोद्गार	11-15
आज सदन की बैठक स्थगित किए जाने की सूचना	15
नत्थी	16-22

विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 15 जनवरी, 1982

विधान सभा की बैठक विधान सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री श्रीपति मिश्र की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—378

अकबर अहमद, श्री	नैनीताल
अकबर हुसैन, श्री	मुरादाबाद
अजहर ईमाम, श्री	मिर्जापुर
अजीजुर्रहमान, श्री	बिजनौर
अजीत कुमार सिंह, श्री	कानपुर
अजीत सिंह सेठी, श्री	मेरठ
अनवार खां, श्री	अलीगढ़
अनवार मुहम्मद खां, श्री	फर्रुखाबाद
अबुल कलाम, श्री	आजमगढ़
अब्दुल रहमान खां नश्तर, श्री	कानपुर
अमरनाथ सिंह, श्री (उर्फ अनिल सिंह)	फतेहपुर
अमर सिंह, श्री	सहारनपुर
अम्बा प्रसाद वर्मा, श्री	बरेली
अम्बिका सिंह, श्री	बस्ती
अम्मार रिजवी, श्री	सीतापुर
अलमेलु अम्माल, कुमारी	बस्ती
अशफाक अहमद अन्सारी, श्री	बरेली
आजाद कुमार कर्दम, श्री	आगरा
इन्द्रजीत, श्री	फतेहपुर
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री (लल्लू)	बहराइच
ईश्वर दयाल त्यागी, श्री	गाजियाबाद
ईश्वर शरण विद्यार्थी, श्री	इलाहाबाद
उदयवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
उमेश्वर प्रताप सिंह, श्री	गोण्डा
उर्मिला अग्निहोत्री, कुमारी	एटा
ए० सी० ग्राइस, श्री	नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय
ओम प्रकाश जिन्दल, श्री	आगरा
कन्हैया लाल, श्री	मथुरा
कन्हैया लाल महेन्द्रू, श्री	लखनऊ
कमला दरियाबादी, श्रीमती	कानपुर
कमला देबी, श्रीमती	हरदोई
कमला प्रसाद सिंह, श्री	जौनपुर
कमला साहनी, श्रीमती	बस्ती
कल्यान सिंह, श्री	बरेली
कल्लू राम, श्री	मिर्जापुर
काजी मोहिउद्दीन, श्री	सहारनपुर
काशीनाथ मिश्र, श्री	बलिया
किरन पाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
किशोरी शुक्ला, श्रीमती	गोरखपुर
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री	हमीरपुर
कुंवर सिंह नेगी, श्री	चमोली
कुदसिया बेगम, श्रीमती	हरदोई
कुबेर भण्डारी, श्री	देवरिया
कृष्ण कुमार शुक्ल, श्री	रायबरेली
कृष्णदत्त, श्री (उर्फ बालराज)	फतेहपुर
कृष्ण मगन सिंह, श्री	बाराबंकी
कृष्ण वीर सिंह, श्री	बदायूं
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर	आगरा
केदारनाथ सिंह, श्री	गोरखपुर
केदार सिंह, श्री	आजमगढ़
केशरी प्रसाद, श्री	जौनपुर
केशोराम, श्री	बदायूं
कलाश चन्द्र, श्री	एटा
कैलाश टण्डन, श्री	वाराणसी
कैलाश प्रसाद, श्री	गोरखपुर
खरपत, श्री	वाराणसी
खान गुफरान जाहिदी, श्री	फतेहपुर
खुदादीन अन्सारी, श्री	देवरिया
खुर्शीद अहमद अन्सारी, श्री	मुरादाबाद
खुर्शेद अहमद, श्री	बहराइच
खुशहाल सिंह राँगड, श्री	टिहरी गढ़वाल
खैरुल बशर, श्री	आजमगढ़
ख्वाजा हलीम, श्री	अलीगढ़
गंगा सागर शंखवार, श्री	कानपुर
गजेन्द्र सिंह, श्री	इटावा
गजेन्द्र सिंह, श्री	बाराबंकी
गया सिंह, श्री	उन्नाव
सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया, श्री	नैनीताल
गुलाब सेहरा, श्री	आगरा
गुलाम नबी, श्री	आगरा
गेंदा देवी, श्रीमती	बस्ती
गोपी नाथ दीक्षित, श्री	उन्नाव
गोरे लाल शाक्य, श्री	इटावा

गौरी देवी, श्रीमती	गोरखपुर
गौरी शंकर ऐडवोकेट, श्री	इटावा
गौरी शंकर भैय्या, श्री	बलिया
चन्दन सिंह, श्री	मथुरा
चन्द्र प्रकाश शर्मा, श्री	बांदा
चन्द्रबली ब्रह्मचारी, श्री	आजमगढ़
चन्द्र शेखर त्रिवेदी, श्री	लखनऊ
चन्द्र सिंह, श्री	मेरठ
चरनजीत सिंह, श्री	पीलीभीत
चारु चन्द्र ओझा, श्री	पिथौरागढ़
चेतराम गंगवार, श्री	बरेली
छत्तर सिंह, श्री	बुलन्दशहर
छेदा लाल चौधरी, श्री	खीरी
छेदी लाल, श्री	गोण्डा
जंग बहादुर, श्री	जौनपुर
जगदीश नरायन, श्री	फतेहपुर
जगदीश प्रसाद, श्री	इलाहाबाद
जगदीश सिंह, श्री	शाहजहांपुर
जगदीश सिंह यादव, श्री	मैनपुरी
जटा शंकर सिंह, श्री	बहराइच
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री	गोरखपुर
जफर अली नकवी, श्री	खीरी
जमुना प्रसाद, श्री	बाराबंकी
जयदीप सिंह, श्री	बरेली
जसवन्त सिंह विष्ट, श्री	अल्मोड़ा
जितेन्द्र पाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
जियाराम शुक्ल 'विकल साकेती', श्री	फैजाबाद
जीराज सिंह मौर्य, श्री	मुरादाबाद
जैराज गौतम, श्री	सुल्तानपुर
झग्गड़ सिंह, श्री	मेरठ
झिल्लमिट राम, श्री	गाजीपुर
तपेश्वर, श्री	आजमगढ़
तेजनारायन त्रिवेदी, श्री	खीरी
तेज बहादुर गंगवार, श्री	पीलीभीत
तेज बहादुर सिंह, श्री	जौनपुर
त्रिवेनी, श्री	आजमगढ़
थम्मन सिंह गहलोत, श्री	बिजनौर
दलगंजन सिंह, श्री	जालौन
दलजीत सिंह, श्री	रामपुर
दामादर शर्मा, श्री	मेरठ
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री	बस्ती
दीनानाथ, श्री	बस्ती
दीपक कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
दीप नारायन वन महन्थ, श्री	गोण्डा
दीपू उर्फ दीप नारायण, श्री	आजमगढ़
दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री	देवरिया

दूधनाथ राजभर, श्री	आजमगढ़
देवी प्रसाद, श्री	बहराइच
देवेन्द्र पाण्डेय, श्री	सुल्तानपुर
देवेन्द्र बहादुर सिंह, श्री	कानपुर
धनीराम वर्मा, श्री	इटावा
धनेश्वरी देवी, श्रीमती	वाराणसी
धरम पाल, श्री	बहराइच
धर्मवीर सिंह, श्री	मेरठ
धर्मवीर सिंह त्यागी, श्री	मुजफ्फरनगर
धर्म सिंह, श्री	बुलन्दशहर
ध्रुप राय, श्री	देवरिया
नकली सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
नत्थू लाल, श्री	हरदोई
नन्द किशोर सिंह, श्री	देवरिया
नन्द राम, श्री	बरेली
नरेन्द्र सिंह, श्री	मेरठ
नरेन्द्र सिंह भण्डारी, श्री	पौड़ी गढ़वाल
नरेन्द्र सिंह विष्ट, श्री	पिथौरागढ़
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नाजिर अली, श्री	शाहजहांपुर
नियाज हसन खां, श्री	प्रतापगढ़
निर्भय नारायण सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)	बलिया
नौनिहाल सिंह, चौधरी	इलाहाबाद
पंचानन राय, श्री	आजमगढ़
पन्ने लाल, श्री	गोरखपुर
परमाई लाल, श्री	हरदोई
परमात्मा प्रसाद सिंह, श्री	बस्ती
प्रवीन कुमार शर्मा, श्री	बुलन्दशहर
परागी लाल चौधरी, श्री	सीतापुर
पहलवान, श्री	जौनपुर
पारवती देवी, श्रीमती	बाराबंकी
पुरुषोत्तम, श्री	मिर्जापुर
पुष्पा चौहान, श्रीमती	अलीगढ़
पुरन चन्द्र श्री,	अलीगढ़
प्रताप नारायण द्विवेदी, श्री	हमीरपुर
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री	प्रतापगढ़
प्रभू नारायण सिंह, श्री	जौनपुर
प्रमोद कुमार, श्री	प्रतापगढ़
प्रियदर्शी जेतली, श्री	फैजाबाद
प्रेमवती, श्रीमती	बदायूं
प्रेमवती तिवारी, श्रीमती	लखनऊ
फखरे आलम, श्री	बदायूं
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री	गोरखपुर
बंशीधर, श्री	रामपुर
बंशीधर राज, श्री	खीरी

बदन सिंह, श्री	आगरा
बनवारी राम, श्री	वाराणसी
बलराम सिंह यादव, श्री	इटावा
बलवीर सिंह, श्री	फर्रुखाबाद
बलवीर सिंह, श्री	रामपुर
बल्देव सिंह आर्य, श्री	उत्तरकाशी
बाबू राम, श्री	पीलीभीत
बाबू लाल, श्री	गोण्डा
बाबू लाल, श्री	हमीरपुर
बाबू सिंह, श्री	अलीगढ़
बिहारी लाल, श्री	नैनीताल
बिहारी लाल दोहरे, श्री	फर्रुखाबाद
बुद्ध पाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
बृज किशोर मिश्र, डा०	देवरिया
बेनी बाई, श्रीमती	झांसी
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री	इलाहाबाद
भगवती सिंह विशारद, श्री	उन्नाव
भगवानदीन कुशवाहा, श्री	कानपुर
भागीरथ, श्री	झांसी
भानु प्रताप सिंह, श्री	बरेली
भास्कर पाण्डेय, श्री	देवरिया
भीखा लाल, श्री	उन्नाव
भीम सिंह, श्री	मेरठ
भूधर नारायण मिश्रा, श्री	कानपुर
भूप सिंह केन, श्री	गाजियाबाद
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री	गोरखपुर
भोला पाण्डेय, श्री	बलिया
मंगल देव, श्री	गोण्डा
मण्डलेश्वर सिंह, श्री	आगरा
मथुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री	बस्ती
मन्जूर अहमद, श्री	मेरठ
मलिक मुहम्मद कमाल यूसुफ, श्री	बस्ती
मलिक मो० जमीर अहमद, श्री	एटा
मसरुर जाफरी, श्री (उर्फ शबरोज)	गोंडा
महाबीर सिंह, श्री	सहारनपुर
महाराज सिंह, श्री	आगरा
महारानी दोहरे, श्रीमती	इटावा
महेश उपाध्याय, श्री	आगरा
महेश चन्द्र, श्री	मेरठ
महेश प्रसाद, श्री	देवरिया
माण्डवी प्रसाद सिंह, श्री	वाराणसी
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री	बस्ती
माधव प्रसाद, श्री	फैजाबाद
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री	एटा
मान बहादुर, श्री	गोण्डा
मारकण्डेय चन्द्र, श्री	गोरखपुर
मित्रसेन, श्री	फैजाबाद
मीर मजहर अली, श्री	बदायूं
मुईद अहमद, श्री	सुल्तानपुर
मुन्शी लाल, श्री	मैनपुरी
मुरलीधर मुनीम, श्री	गोण्डा
मुहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
मेंहदी असगर, श्री	मुजफ्फरनगर
मोती लाल देहलवी, श्री	कानपुर
मोहन लाल, श्री	हमीरपुर
मोहन सिंह, श्री	देवरिया
मोहम्मद उमर, डाक्टर	गोण्डा
मोहम्मद नबी, श्री	बस्ती
मोहम्मद रफी सिद्दीकी, श्री	लखनऊ
मोहम्मद वसीम ,हाजी	रायबरेली
मोहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री	वाराणसी
यदुनाथ, श्री	मिर्जापुर
यशपाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
यशपाल सिंह, श्री	सहारनपुर
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)	गोरखपुर
योगेन्द्र सिंह, कुंवर	फरुखाबाद
योगेश चन्द्र, श्री	वाराणसी
रईस उद्दीन वारसी, श्री	मुरादाबाद
रघुराज प्रसाद उपाध्याय, श्री	गोण्डा
रघुबीर सिंह यादव, श्री	मैनपुरी
रती राम, श्री	बिजनौर
रमा कान्त मिश्रा, श्री	इलाहाबाद
रमेश चन्द्र, श्री	रायबरेली
राज किशोर राव, श्री	बहराइच
राज कुमार राय, श्री	आजमगढ़
राजपति देवी, श्रीमती	सुल्तानपुर
राजपाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
राजमंगल पाण्डेय, श्री	देवरिया
राजेन्द्र अग्निहोत्री, श्री	झांसी
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री	सीतापुर
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
राधेश्याम पटेल, श्री	इलाहाबाद
राध श्याम वर्मा, श्री	फर्रुखाबाद
राम अवध प्रसाद, श्री	बस्ती
राम आसरे पासवान, श्री	बस्ती
राम आसरे वर्मा, श्री	हरदोई
राम औतार दीक्षित, श्री	हरदोई
राम करन, श्री	वाराणसी
राम कुंवर सिंह, श्री	आजमगढ़
राम कुमार भार्गव, श्री	सीतापुर

राम कृष्ण उपाध्याय, डा0	जौनपुर
राम कृष्ण माहेश्वरी, श्री	मुरादाबाद
राम गोविन्द, श्री	बलिया
राम चन्द्र, श्री	वाराणसी
राम चरण सिंह, श्री	मिर्जापुर
राम जनम सिंह, श्री	वाराणसी
रामजी राम, श्री	फैजाबाद
राम बनी, श्री	गाजीपुर
राम नरायन, श्री	गाजीपुर
राम पाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
राम प्यारे पाण्डेय, श्री	फतेहपुर
राम प्रसाद, श्री	जालौन
राम प्रसाद, श्री	मुजफ्फरनगर
राम भजन लाल, श्री	खीरी
राम यश सिंह, श्री	सहारनपुर
राम रतन सिंह, श्री	सीतापुर
राम लाल, श्री	सीतापुर
राम लाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम शिरोमणि, श्री	जौनपुर
राम समुझावन, श्री	जौनपुर
राम सागर, श्री	बाराबंकी
राम सिंह, श्री	सहारनपुर
राम सिंह, श्री	सुल्तानपुर
राम सिंह खन्ना, श्री	बरेली
राम सिंह रावल, श्री	एटा
राम सेवक, श्री	सुल्तानपुर
राम स्वरूप निम, श्री	सहारनपुर
रामस्वरूप वर्मा, श्री	कानपुर
राम हर्ष, मिश्र, श्री	बहराइच
राम हर्ष राय, श्री	गाजीपुर
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री	बरेली
रामेश्वर प्रसाद, श्री	बांदा
रिजवानुर्रहमान किदवाई, श्री	बाराबंकी
रियासत हुसैन, श्री	मुरादाबाद
रुद्र प्रताप सिंह, श्री	देवरिया
रूप राम, श्री	शाहजहांपुर
रूल्हा सिंह, श्री	सहारनपुर
लटूरी सिंह, श्री	एटा
लल्लू सिंह चौहान, श्री	मैनपुरी
लाल प्रताप सिंह, श्री	प्रतापगढ़
लालसा, श्री	आजमगढ़
लोकपति, श्री	मिर्जापुर
लोकमणि शर्मा, श्री	मथुरा
वासुदेव सिंह, श्री	प्रतापगढ़
विजय कुमार, श्री	लखनऊ
विजय पाल सिंह, श्री	गाजियाबाद
विजय शंकर सिंह, श्री	गाजीपुर
विजय सिंह, श्री	मिर्जापुर
विद्या सागर नौटियाल, श्री	टिहरी गढ़वाल
विनोद कुमार तिवारी, डा0	पीलीभीत
विमल प्रसाद तिवारी, श्री	फर्रुखाबाद
विमला राकेश, श्रीमती	सहारनपुर
विशन लाल, श्री	बिजनौर
विश्वनाथ प्रताप सिंह, श्री	बांदा
विश्राम दास, श्री	इलाहाबाद
विष्णु दयाल वर्मा, श्री	मैनपुरी
वीर बहादुर सिंह, श्री	गोरखपुर
वीरेन्द्र कुमार चौधरी, श्री	सीतापुर
वीरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
वीरेन्द्र सिंह ढाना, कुंवर	गाजियाबाद
शंकर सिंह, श्री	जालौन
शम्भूनाथ, श्री	आजमगढ़
शरीयतुल्ला, श्री	मुरादाबाद
शिरोमणि, श्री	बांदा
शिव दर्शन, श्री	रायबरेली
शिव नरेश, श्री	बांदा
शिव नारायण सिंह नेगी, श्री	नैनीताल
शिवपाल सिंह, श्री	उन्नाव
शिव बालक, श्री	रायबरेली
शिवमंगल सिंह, श्री	मैनपुरी
शिवानन्द नौटियाल, डाक्टर	पौड़ी गढ़वाल
शर बहादुर, श्री	फैजाबाद
शौनाथ सिंह, श्री	बिजनौर
श्याम नारायन तिवारी, श्री	गोरखपुर
श्याम लाल वाजपेयी, श्री	बाराबंकी
श्याम सिंह, श्री	बिजनौर
श्याम सूरत उपाध्याय, श्री	इलाहाबाद
श्रीकृष्ण गोयल, श्री	बदायूं
श्रीनाथ सिंह, श्री	वाराणसी
श्रीपति मिश्र, श्री	सुल्तानपुर
संकटा प्रसाद शास्त्री, श्री	वाराणसी
सईदुल हसन, श्री	बुलन्दशहर
सच्चिदानन्द, श्री	उन्नाव
सतीश अजमानी, श्री	खीरी
सतीश चन्द्र जायसवाल, श्री	इलाहाबाद
सत्यपाल सिंह, श्री	शाहजहांपुर
सन्त बख्श रावत, श्री	लखनऊ
सन्तोषकुमारी, श्रीमती	बदायूं
सरजू प्रसाद 'सरोज', श्री	प्रतापगढ़
सरदार सिंह, श्री	मथुरा
सिकन्दर अली खां, श्री	शाहजहांपुर
सीताराम निषाद, श्री	फैजाबाद

सुखवीर सिंह गहलौत, श्री — गाजियाबाद
सुग्रीव सिंह, श्री — देवरिया
सुजान सिंह बुन्देला, श्री — ललितपुर
सुनीता चौहान, श्रीमती — रायबरेली
सुनील शास्त्री, श्री — गोरखपुर
सुन्दर सिंह, श्री — बहराइच
सुमन लता दीक्षित, कुमारी — कानपुर
सुरेन्द्र कपिल, श्री — सहारनपुर
सुरेन्द्र कुमार, श्री (उर्फ मुन्नी) — गाजियाबाद
सुरेन्द्र प्रताप नारायण, श्री — बस्ती
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री — अलीगढ़
सुरेश दत्त पालीवाल, श्री — जालौन
सुल्तान सिंह, श्री — मुरादाबाद
सूबेदार सिंह, श्री — मैनपुरी
सूयनाथ उपाध्याय, श्री — जौनपुर
सैय्यद जकीउद्दीन, श्री — मेरठ

सोमांश प्रकाश, श्री — मुजफ्फरनगर
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती — लखनऊ
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री — हमीरपुर
हंसराज सिंह वर्मा, श्री — एटा
हर गोविन्द वर्मा, श्री — सीतापुर
हरदेव, श्री — बलिया
हरनरायन सिंह, श्री — रायबरेली
हरवंश प्रसाद पाण्डेय, श्री — बांदा
हरिद्वार पाण्डेय, श्री — गोरखपुर
हरि प्रसाद, श्री — उन्नाव
हरिवंश सहाय, श्री — देवरिया
हरी किशन, श्री — कानपुर
हरीशंकर, श्री — हरदोई
हाफिज मोहम्मद सिद्दीक, श्री — मुरादाबाद
हुकम सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
हेमचन्द निमेष, श्री — मेरठ

विधान सभा

श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ

श्री अध्यक्ष—

माननीय सदस्यगण, वर्ष 1982 के प्रथम सत्र के अवसर पर नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं। आपको सम्बोधित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

माननीय सदस्यगण, यह प्रदेश अपनी गौरवमयी परम्पराओं, राष्ट्रीय एकता तथा सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध रहा है। जनतंत्रीय प्रणाली, मान्य परम्पराओं तथा मर्यादाओं पर आधारित है। राजनैतिक मतभेद के होते हुए भी शासन को अपना कार्य करने का अवसर प्रदान करना ही जनतन्त्र की आधार शिला है। इस प्रदेश को आगे बढ़ाने का गुरुतम भार आपके कन्धों पर है। मुझे आशा है कि आप इस प्रदेश को समृद्धि की राह पर ले चलेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं आपको अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन के लिए आहूत करता हूं। जय हिन्द।

(श्री राज्यपाल के अभिभाषण के लिए देखिए नत्थी 'क' आगे पृष्ट 6–22 पर)

भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री सालिगराम जायसवाल, राम बचन यादव, गनेशी लाल चौधरी, गया प्रसाद मेहरोत्रा, अभय राम यादव, परमानन्द सिन्हा, ज्वाला प्रसाद सिन्हा, चन्द्र भान शर्मा, दुर्योधन प्रसाद, ननदेश्वर लाल, धर्म चन्द्र मिश्र तथा श्री मेहरबान सिंह के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)—

माननीय अध्यक्ष जी, पिछले सत्र और इस सत्र के अवसान के बीच हमारे कई साथी, कई माननीय सदस्य हम लोगों के बीच नहीं रहे। इनमें सर्वश्री सालिग राम जायसवाल, रामवचन यादव, गनेशीलाल चौधरी, गया प्रसाद मेहरोत्रा, अभय राम यादव, परमानन्द सिन्हा, ज्वाला प्रसाद सिन्हा, चन्द्रभान शर्मा, दुर्योधन प्रसाद, नरवदेश्वर लाल, धमचन्द्र मिश्र, मेहरबान सिंह, हम लोगों के बीच नहीं रहे हैं।

मान्यवर, श्री सालिगराम जायसवाल जिस शहर के थे, उसी शहर में मेरा भी जन्म लेने और जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य रहा। उनका स्नेह आर्शीवाद और उनके साथ काम करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। श्री सालिग राम जी चुनौतियों को भी चुनौती देते रहे और उनका जीवन संघर्ष का पर्यायवाची कहा जाय तो गलत न होगा। स्वतन्त्रता संग्राम में पांच बार जेल गए और उन्होंने सात वर्ष तक जेल यातनाएं सही हैं। अपने जीवन-काल में वे इस सदन के सदस्य रहे। विधान परिषद् के भी सदस्य रहे और मन्त्रि मण्डल के भी सदस्य रहे। लेकिन सालिग राम जी जो कुछ भी रहे जनता के रहे। जहां भी वे गये वे मन्त्रि मण्डल में भी आए, पर जनता उनके साथ रही। बीमार भी रहते थे तो इलाहाबाद के अपने छोटे से घर में जिस छोटी सी कोठरी में रहते थे, उनकी बीमारी की हालत में भी यदि किसी गरीब या दुखिया ने उनका दरवाजा खटखटाया तो वह उनके दरवाजे से कभी खाली वापस नहीं गया। उनके घर का दरवाजा सब के लिए हमेशा खुला रहता था। इस तरह उनके जीवन का अन्तिम काल भी जनता के बीच में व्यतीत हुआ। पर वह आज हम लोगों के बीच नहीं ह। उनकी कहानी जन–जन में रहेगी। मुझे उनकी अन्तिम यात्रा में शरीक होने का अवसर मिला था। एक ओर गंगा बह रही थीं दूसरी ओर उनके पीछे जन–जन का एक बड़ा समूह, जनता की एक गंगा जैसे संगम पर पहुंच गयी हो और उनके प्रवाह के साथ एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी की वीरगाथा का प्रवाह हुआ। एक जन-सेवी की परम्पराओं का प्रवाह हुआ लेकिन प्रवाह के साथ ही गंगा की लहरों की तरह से उनकी सेवाएं शाश्वत रहेंगी। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हम लोगों की संवेदनाएं उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, रामवचन यादव जी हमारे बीच नही रहे। उनका जन्म आजमगढ़ के नोहरा ग्राम में हुआ था। वे एक जन-विश्वास प्राप्त जन-नेता थे। पांच बार जनता ने इस सदन में उनको भेजा और भारतीय क्रान्ति दल और जनता पार्टी में उन्होंने बहुत

जिम्मेदारी के स्थान पर कार्य किया। प्रान्त लोकदल के अध्यक्ष रहे और चौधरी चरण सिंह के मन्त्रि मण्डल में वह मन्त्री भी रहे। शिक्षा के जगत में आजमगढ़ मे उन्होंन अमूल्य योगदान दिया। मान्यवर, यह सब साथी जो हम लोगों के बीच से चले गए ह उनके शोक सन्तप्त परिवार को हम लोगों की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें।

श्री मोती लाल देहलवी--

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री सालिगराम जायसवाल और स्वर्गीय श्री राम बचन यादव जी के निधन पर माननीय नेता सदन ने जो शोकोद्गार व्यक्त किए हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, जैसा कि माननीय नेता सदन ने कहा कि स्वर्गीय श्री सालिगराम जायसवाल जी का तमाम जीवन, जब से वह छात्र थे, तभी से वह गांधी जी के विचारों से उत्प्रेरित हुए और शिक्षा आन्दोलन में कई बार उन्होंने जेल की यातनायें सहीं। मान्यवर, वह सोशलिस्ट पार्टी में भी रहे और वहां भी उन्होंने जेल यातनायें भोगीं। जब वह कांग्रेस में गए तो भी मेरा सम्पर्क उनसे रहा उनका वही संघर्षशील विचार रहा और जब वह स्वास्थ्य मन्त्री रहे तब भी उन्होंने बड़ी निःस्वार्थ भावना से इस प्रदेश की सेवा की। मान्यवर, मैं उनको पुनः अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करूंगा कि मेरी व मेरे दल की शोक संवेदना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, श्री राम बचन यादव जी पांच बार इस माननीय सदन में चुनकर आये--कांग्रेस से भी, भारतीय क्रांति दल से भी। यह उनकी लोक-प्रियता का अच्छा खासा प्रमाण है। मान्यवर, वह माननीय चौधरी चरण सिंह साहब के मन्त्रि मण्डल में मन्त्री भी रहे। वह मन्त्री भी हुए और मृत्यु तक वह चौधरी चरण सिंह के बहुत ही अनन्यतम भक्तों में से रहे। मान्यवर, लोकदल में भी उन्होंने अच्छे-अच्छे ऊंचे पदों पर रह कर, लोकदल को सुशोभित किया, पिछड़ा वर्ग संघ में भी उन्होंने उच्च पदों पर कार्य किया। यह प्रदेश जानता है कि वह पिछड़े वर्ग की सेवा में अपना तमाम समय अर्पित किए हुए थे और बहुत ही शुद्ध मन से वह पिछड़े वर्ग के लोगों की सेवा करते रहते थे।

मान्यवर. उनके निधन से निश्चित ही एक बहुत बड़ी रिक्तता आई है। प्रदेश ने एक अच्छा समाज सेवी अपने बीच से खो दिया है। मान्यवर, मैं अपने और अपने दल की बहुत ही दुःखी भाव से सम्वेदना व्यक्त करते हुए आपसे निवेदन करूंगा कि मेरे और मेरे दल की शोक सम्वेदना माननीय राम बचन यादव के शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राज मंगल पाण्डेय--

मान्यवर, नेता सदन व नेता विरोधी दल की भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुए।

मान्यवर, सालिगराम जायसवाल जी, राम बचन यादव जी के साथ मेरे सम्बन्ध बहुत अच्छे रह और उनके साथ काफी हद तक कार्य करने का मुझे मौका मिला है। मान्यवर, इस प्रदेश का दुर्भाग्य है कि धीरे-धीरे वे व्यक्ति जो कि प्रेरणा के श्रोत रहे हैं हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं। विशेषकर सालिगराम जायसवाल जी उन लोगों में रह हैं जिन्होंने अपने विचारों से हर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर के और आजादी की लड़ाई में अपना महान योगदान देकर अपना एक विशिष्ट स्थान इस उत्तर प्रदेश की राजनीति में और उत्तर प्रदेश के बाहर समाज सेवा के फलस्वरूप बना लिया था। मान्यवर, यह ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने सही मन से गरीबों को समझने की कोशिश की। गरीब चाहें मजदूर रहा हो, चाहे गरीब किसान रहा हो, इनकी समस्याओं को, चाहे वह अंग्रेजों की

[श्री राज मंगल पाण्डेय]

हुकमत रही हो या अपना शासन जब आया तब भी, जब भी उन्होंने समझा कि सरकार कोई अन्याय कर रही है इन तबकों के खिलाफ, समझा और निरन्तर संघर्ष किया । मेरे साथ वह यहां स्वास्थ्य मन्त्री रहे और कभी भी किसी को यह नहीं मालूम हुआ । मान्यवर, जो कुछ वह पहले थे उसमें और मन्त्री बनने के बाद, उनमें कोई फर्क नहीं आया। मन्त्री बनने से पहले भी उनको लोग मन्त्री जी ही कहते थे और जिस नाम से लोगों ने उनको विभूषित किया था उसको उन्होंने अपनी सेवा के माध्यम से चरितार्थ करके दिखा दिया । मान्यवर, गरीबों की समस्या हो, किसी अन्याय से लड़ने की बात रही हो, हमेशा उन्होंने अपनी केवल राय ही नहीं दी बल्कि लोगों को प्रेरित किया इस बात के लिए अगर सही समाज बनाना है, उत्पीड़ित न हो सकें वह समाज बनाना है, तो हर व्यक्ति का यह नैतिक दायित्व होता है कि वह इनसे संघर्ष करें और जब तक वे लोगों को न्याय न दिला सकें उससे सबको बल न दिला सके, तब तक उनको जीवन में राहत नहीं मिली। मैं अपनी और अपने दल की सारी भावनाओं को आपके माध्यम से उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाना चाहता हूं । उन्होंने देश और प्रदेश के लिए बहुत कुछ किया है। आज भी और आने वाली पीढ़ी के लिए भी वे प्रेरणा के संकेत रहेंगे। वे समझते थे कि गरीब, दुखी और निर्धन को कैसे न्याय दिलाया जा सके ।

मान्यवर, इसी कड़ी में श्री राम बचन यादव का भी नाम लेना चाहता हूं। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनको ऊंची शिक्षा न मिली हो लेकिन व्यावहारिक जगत में उनकी बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी कि वे बड़ी से बड़ी समस्या का निदान कर सकते थे, उनमें क्षमता थी उनमें सामर्थ्य थी । उन्होंने भी सालिग राम जायसवाल की भांति निर्धनता, अज्ञानत, और सामाजिक अन्याय के साथ घोर संघर्ष किया, उसका विरोध किया और उस वक्त तक लगे रहे जब तक कि उन्हें सफलता नहीं मिली । इस असेम्बली में भी जब वे लोगों से मिलते थे तो ऐसा मालूम होता था कि उनका सहज स्वभाव निखर आया हो। उनमें कोई कटुता नहीं थी । जिन समस्याओं को समझने में कभी-कभी उनको दिक्कत होती थी उनके बारे में उन्हें किसी भी माननीय सदस्य से पूछने में कोई संकोच नहीं होता था। मान्यवर, इस देश और प्रदेश की उस पीढ़ी को जगाने में जिन्हें सचमुच आवश्यकता है हमारी और आपके सहयोग की, उन्होंने उनके लिये जो कुछ भी किया है वह अनुकरणीय है। मैं अपनी और अपने दल की भावना आपके माध्यम से उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाना चाहता हू और विशेष जोर देकर कहना चाहता हूं कि इन दोनों महान विभूतियों ने जो कुछ भी प्रेरणा हमको दी है हम उसको लेकर इस प्रदेश को समृद्ध करेंगे और निरक्षरता और अज्ञानता को दूर करने के वास्ते भरसक प्रयास करेंगे ।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय श्री सालिगराम जायसवाल जी तथा श्री राम बचन यादव के निधन के सम्बन्ध में जो उद्गार माननीय नेता सदन, उप नेता विरोधी दल तथा नेता कांग्रेस दल ने व्यक्त किये हैं उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, ये दोनों ही ऐसी महान विभूतियां थीं जिनके निकट सम्पर्क तक मुझे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उच्च पदों पर पहुंचने के बाद भी इन दोनों विभूतियों के मन में अपने साथियों और सहयोगियों के प्रति जो स्नेह और सौजन्यता थी वह निस्सन्देह अनुकरणीय है । माननीय जायसवाल जी का व्यवहार ऐसा था जैसा कि वे हमारे बीच में कल ही थे ऐसा लगता है । जैसा कि मेरे पूर्व वक्ताओं ने उनके प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं इन दोनों व्यक्तियों ने समाज के कमजोर वर्ग के लिए, उनके हित के लिये, उनके उत्थान के लिये जीवन भर संघर्ष किया और जीवन के अंतिम क्षणों तक उनकी सेवा में बराबर लगे रहे। मैं समझता हूं कि उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके पदचिन्हों पर चलें और उनकी कड़ियों को अपन में समाविष्ट करें । इन शब्दों के साथ मैं अपनी और अपने दल की ओर से उनके प्रति

श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमारी इन भावनाओं को शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दें ।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव---

मान्यवर, स्वर्गीय श्री सालिग राम जायसवाल तथा स्वर्गीय राम बचन जी यादव के निधन के बारे में जो उद्गार माननीय नेता सदन, उप नेता लोक दल, नेता कांग्रस दल तथा नेता भारतीय जनता पार्टी ने व्यक्त किये हैं, मैं अपने और अपने दल की ओर से उनसे सम्बद्ध करते हुये माननीय सदस्यों से यह कहना चाहूंगा कि हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही होगी कि जिस प्रकार से राजनीतिक जीवन में इन विभूतियों ने कार्य किया और अपनी छाप छोड़ी है हम उनका अनुसरण करें। सालिगराम जी जिन्हें मंत्री जी कहा जाता था वे कांग्रेस में थे, मैं विरोध पक्ष से विधान परिषद् में सदस्य था उस समय की मुझे एक घटना याद आती है कि जब उन्होंने एक आदेश किया और उस समय के मुख्य मंत्री जी ने उनसे कहा कि आप इस तरह के आदेश कर देते है जिससे बड़ी कठिनाई हो जाती है तो सालिगराम जी ने कहा था मैं जनता का सेवक हूं और जनता का सेवक रहूंगा चाहे मंत्री रहूं या न रहूं, मेरे कार्य करने का तरीका यही है और यही कारण है कि उनके समय के जो लोग हमारे बीच में हैं उनको याद होगा कि लोग अधिकार से कहा करते थे कि हम मंत्री जी से काम करा लेंगे शायद ही कोई ऐसा विधायक होता था जो कि उनसे असन्तुष्ट होता था। इसी प्रकार जब मैं इलाहाबाद गया तो उनकी लोकप्रियता जो मैंने वहां देखी वह अन्य लोगों में साधारणतया नहीं देखी है। छोटे से छोटा व्यक्ति भी मंत्री जी से और राम बचन यादव जी से परिचित था। 1964 से स्व0 राम बचन जी एवं हम एक ही दल में रहकर कार्य करते रहे, मुझे अनुभव है कि राम बचन यादव जी में बड़ी राजनीतिक सूझ-बूझ थी। वे पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधि हुआ करते थे और प्रदेश में उनके लिए सदैव कार्य करते रहे एक बहुत बड़ी सम्मेलन पिछड़ी जाति और समाज में जो दलित है उनके उत्थान के लिए वे प्राय: सम्मेलन किया करते थे और उनके लिए वह हमेशा कार्य करते रहे। उनका कार्य करने का तरीका अनोखा था। सत्ता पक्ष या विरोध पक्ष का कोई व्यक्ति यह अनुभव नहीं करता था कि वे किस विशेष पक्ष के हैं और वे जनसेवा के किसी के काम को इन्कार नहीं करते थे। उनके चेहरे पर कभी किसी ने गुस्सा नहीं देखा होगा। अपने अन्त समय में भी जब वह अस्वस्थ थे अगर कोई राजनीतिक व्यक्ति उनके पास चला जाता था तो उनके तकिया के नीचे से कुछ न कुछ धन वह उसे दे देते थे। यह खूबी माननीय जायसवाल जी में और माननीय राम बचन यादव जी दोनों में थी। अगर कोई मीटिंग चाहे दूसरे पक्ष की क्यों न हो अस्वस्थ होने के बावजूद वे रिक्शा में बैठ कर उसे सुनने चले जाते थे इतनी बड़ी राजनैतिक दिलचस्पी उनमें थी। इन शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करूंगा। कि हमारी भावना उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री भीखालाल---

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सालिगराम जायसवाल और माननीय राम बचन यादव जी के सम्बंध में जो भावनाएं नेता सदन और अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। इन दोनों महान विभूतियों के साथ काफी निकट से रहने का अवसर मुझे मिला ह। वह अत्यन्त सरल जीवन के व्यक्ति रहे कोई व्यक्ति यह महसूस नही करता था कि हम उनसे मिल नहीं सकते हैं। सालिगराम जायसवाल जी को यह कहा जाय कि वह राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्पराओं की आदर्श मूर्ति थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मैंने देखा कि जब कभी आदर्शों, सिद्धान्तों और पद में किसी एक को चुनने का अवसर आता था तो वह पद का परित्याग कर देते थे और

आदर्श तथा सिद्धान्तों का नहीं, यही उनकी विशेषता थी यह ऐसे आदर्श थे, जिससे इस पीढ़ी और आगे आने वाली पीढ़ी की प्रेरणा मिलेगी और मिलती रहेगी।

माननीय रामबचन यादव जो अपने जीवन पर्यन्त गरीबों, हरिजनों और पिछड़ी जातियों के उत्थान केलिए अनवरत संघर्ष करते रहे और वह पिछड़ा वर्ग संघ के कई वर्षों तक महामंत्री रहे। उस संगठन में भी मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। उनमें एक लगन थी कि किस तरह से पिछड़े हुए लोगों को आगे उठाया जाए और जीवन के अधिकतम दिनों तक वह उसमें अपनी उसी लगन के साथ रहे। इन दोनों महानुभावों के न रहने से अपूर्ण क्षति हुई है। इन शब्दों के साथ मैं अपने और अपने दल की ओर से दिवंगत नेताओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और श्रीमन्, आपसे निवेदन करूंगा कि आप मेरे विचार इन दिवंगत आत्माओं के परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री रियासत हुसैन---

श्रीमन्, आज नेता सदन ने काफी लम्बी सूची माननीय सदन में प्रस्तुत की उन महानुभावों की जो इस माननीय सदन की सेवा कर चुके हैं और अब आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं। मैं उन सब के लिए ही अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मान्यवर, सालिग राम जायसवाल जी स मैंने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ सीखा है। गुड़ आन्दोलन के सिलसिले में मेरठ जेल में भी मैं लगातार 20 दिन तक उनके साथ वहां रहा हूं, इसके अलावा वह मेरे नेता रहे, लेकिन उनकी जो विशषता थी, उनके किसी भी कार्य से, बात से यह जाहिर ही नहीं होता था कि वह नेता हैं। उनके हर काम से यही जाहिर होता था कि वह एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। जहां तक उनके व्यक्तित्व का सवाल है, मुझे अच्छी प्रकार याद है जब मेरठ जेल में हम लोग थे, तो उस समय इस प्रदेश के बहुत बड़े विद्वान् श्री मुकुट बिहारी लाल ने उनके लिए यह अलफाज कहा था कि यदि मैं किसी को नेता मानता हूं तो श्री सालिगराम जायसवाल को मानता हूं। उनके अन्दर उसूलों की, तपस्या और त्याग का जो माद्दा था वह बहुत ही कम, बहुत ही रेयर केसेज में देखने को मिलता है। उन्होंने मन्त्रि परिषद से जब इस्तीफा दिया, तो अपने वसूलों के कारण ही दिया। मैंने उनकी जनप्रियता की मिसाल तक देखा, जब इलाहाबाद में पार्लियामेंन्ट का चुनाव वह लड़े थे और लगातार देहात में रह कर उनका चुनाव लड़ाया था, मैंने जब उनको देखा था कि किस तरह लोग उनको मन्त्री जी के नाम से पुकार कर किस कदर उनसे प्यार और मोहब्बत करते थे। उनको इस सदन में रह कर भी सन् 1962 से जब मैं भी था, मैंने पास से देखा है उनकी सादगी से हमें प्रेरणा मिलती थी लगातार रोजाना। रोजाना सुबह जब वह सदन में आते थे, उनसे जब हम दुआ सलाम करते थे, तो वह अपने बच्चों की तरह हमसे व्यवहार और प्यार करते थे, वह सब हमें बराबर याद रहेगा। मैं एक बार फिर सभी स्वर्गीय महानुभावओं के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप उनके दुखी परिवार को हमारी संवेदना भेजने की कृपा करें।

श्री राम आसरे वर्मा---

माननीय नेता सदन ने व अन्य विरोधी पक्ष के नेताओं द्वारा जो उदगार व्यक्त कि। गये हैं, उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुए यह कहना चाहूंगा कि सालिगराम जायसवाल जो सदैव से ही सामाजवादी विचारधारा के पोषक रहे थे, वह चाहे जिस पार्टी में या चाहे जिस जगह रहे हों वह समाजवादी विचारों के लिए सदैव सतत संघर्षशील रहे हैं। उन्हीं की कड़ी में राम बचन जी यादव आते हैं। आज छोटे लोगों, अनुसूचित जातियों और पिछड़ी जातियों में मनोबल की बात हम सोचते हैं तो हम यह पाते है कि वह जीवन के प्रत्येक क्षणों में उनमें मनोबल का संचार करते रहे। और ऐसी स्थिति में हमारे बीच से उठ गये अन्य स्वर्गीय भूतपूर्व विधायकों जिनके नाम माननीय नेता सदन

भूतपूर्व सदस्य सर्वश्री सालिगराम जायसवाल, राम बचन यादव, गनेशी लाल चौधरी, गया प्रसाद मेहरोत्रा, अभयराम यादव, परमानन्द सिन्हा, ज्वाला प्रसाद सिन्हा, चन्द्रभान शर्मा, दुर्योधन प्रसाद, नखदेश्वर लाल, धर्म चन्द्र मिश्र तथा श्री मेहरबान सिंह के निधन पर शोकोद्‌गार

ने सुनाए हैं, उनका जीवन भी प्रदेश की राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में विभिन्न रूपों से जुड़ा हुआ था, मैं अपनी ओर से प्रगतिशील दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी संवेदना उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।"

श्री अध्यक्ष--

माननीय नेता सदन, उपनेता विरोधी दल एवं अन्य सभी दलों के नेताओं ने जो अपनी-अपनी श्रद्धांजलियां दिवंगत व्यक्तियों के प्रति अर्पित की हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। सर्वश्री सालिग राम जायसवाल (इलाहाबाद), राम बचन यादव (आजमगढ़) गनेशी लाल चौधरी (सीतापुर), गया प्रसाद मेहरोत्रा (सीतापुर), अभय राम यादव (इटावा), परमानन्द सिन्हा (इलाहाबाद), ज्वाला प्रसाद सिन्हा (गोण्डा), चन्द्रभान शर्मा, (मुजफ्फरनगर), दुर्योधन प्रसाद (गोरखपुर), नरबदेश्वर लाल (आजमगढ़), धर्मचन्द मिश्र (फैजाबाद) एवं मेहरबान सिंह (इटावा) ऐसी विभूतियां रही है जिन्होंने विभिन्न समयों में अनेकानेक बार इस सदन में जनता की सेवा के लिए अपने विचार व्यक्त किए और कार्य किए हैं। इनमें से कुछ दिवंगत आत्माओं को अधिक समय तक सदन में कार्य करने का अवसर मिला है और कुछ ने थोड़े समय में ही अपनी प्रतिभा से लाभान्वित किया है। मुझको स्वर्गीय श्री सालिगराम जायसवाल व श्रीराम बचन यादव जी के साथ उनके राजनीतिक दल और शासन में भी कार्य करने का अवसर मिला। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि ये ऐसे व्यक्ति थे कि इनके साथ कुछ देर बैठने के बाद जब उनसे कोई अलग होता था नो ऐसा लगता था कि वह कुछ सीख कर अवश्य आया है और अगर ऐसा नहीं तो कुछ दिनों तक (उनके पथ) पर चलने की मनोवृत्ति अवश्य बन जाती थी।

इन सबके प्रति मैं अपनी व्यक्तिगत और सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके सन्तप्त परिवार को अपनी और आपकी श्रद्धांजलि भिजवा दूंगा। अब हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिये दो मिनट तक मौन खड़े हो जायं।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री आत्मा राम गोविन्द खेर के निधन पर शोकोद्‌गार

मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)—

माननीय अध्यक्ष जी, श्री आत्माराम गोविन्द खेर जी हम लोगों के बीच में नहीं रहे। श्री खेर जी और इस सदन का सम्बन्ध, उनकी स्मृति अविभाज्य है। कालान्तर में भी उसमें अन्तर आने वाला नहीं है, काल के परे है। मान्यवर, संसदीय प्रणाली की जो प्रतिमा इस प्रान्त में उन्होंने गढ़ी वह हर एक के लिए मार्ग दर्शक बन गई है। जो निर्णय उन्होंने इस आदरणीय सदन में दिये वे आज हमारे लिए दिशापोत बन गये ह। वे केवल एक कुशल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि एक मर्मज्ञ व संगीतज्ञ भी ये और इसी अपन गुण के कारण वे विरोध पक्ष को जो कभी-कभी बेसुरापन ले आते हैं, अपनी मधुर वाणी से उनको एक स्वर में ले आते थे और इस सदन को कार्य बड़े ही सुचारु रूप से चलाते थे। जब वे अध्यक्ष थे तो इस सदन में पहली बार मुझे यहां आने का अवसर मिला था। उनके व्यक्तित्व की छाप पर उनकी प्रेरणा मेरे जीवन में सदा बनी रहेगी। सभी को उनके जीवन से प्रेरणा मिली है। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी संवेदना उनके सन्तप्त परिवार तक भिजवाने की कृपा करें।

श्री मोती लाल देहलवी—

मान्यवर, यह बड़े दुख का अवसर है कि आज हम अपने भूतपूर्व अध्यक्ष श्री आत्मा राम गोविन्द खेर के निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए खड़े हुए हैं। उनके बारे में माननीय नेता सदन ने जो कुछ कहा है उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, वैसे तो वे दो बार इस माननीय सदन के अध्यक्ष रहे, पर पहली बार जब वे अध्यक्ष चुने गए तो मुझे उनके साथ इस आदरणीय सदन काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वे बहुत ही मधुर स्वभाव के थे और बड़ी कुशलता से इस आदरणीय सदन का कार्य चलाते थे। जब कभी कोई हंगामा यहां हो जाता था तो बड़े ही सुचारु रूप से समस्या को सुलझा लेते थे। वे उस वक्त परेशान अवश्य हो जाते थे, पर उनके व्यवहार और कुशल व्यक्तित्व के कारण सभी उनका कहना मानते थे। उनके निधन से इस प्रदेश में एक रिक्तता आ गई है। उनका यह अनोखा व्यक्तित्व अब हमें देखने को नहीं मिलेगा। मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जो शोकोद्गार अभी उनके विषय में व्यक्त किए हैं उनसे मैं भी अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करते हुए आपसे अनुरोध करूंगा कि आप हमारी संम्वेदनाएं उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राजमंगल पाण्डेय—

मान्यवर, आज एक ऐसे व्यक्ति के निधन का समाचार इस सदन में दिया गया, जसके बारे में अभी नेता सदन और उप नेता विरोधी दल ने अपने शोकोद्गार व्यक्त किया, मैं उससे अपने को सम्बद्ध करते हुए इतना कहना चाहूंगा कि इस लोकतांत्रिक प्रणाली में जिसे इस देश ने स्वीकार किया, जब तक कि यह लोक तांत्रिक प्रणाली इस देश में रहेगी, मान्यवर, स्वर्गीय आत्मा राम गोविन्द खेर का नाम बना रहेगा। मान्यवर, विनम्रता के मूर्ति, सादगी तथा विद्वता उनमें इस सीमा तक थी कि सदन में अध्यक्ष के रूप में जो कुछ भी उन्होंने कार्य किए हैं या जो भी निर्देश या रूलिंग्स दी हैं, वह आने वाले काफी समय तक इस सदन की गरिमा और इस सदन को चलाने में सहायक होती रहेंगी। मान्यवर, जब वह अध्यक्ष के रूप में उसी कुर्सी पर विराजमान रहते थे, मान्यवर, जिसमें आप बैठे हैं, इस सदन में ऐसे-ऐसे भी लोग आये, जिन्होंने दबे हुए और गरीबों की समस्याओं को लेकर आवाजें उठायीं और वह आवाजें इतनी बुलन्द थीं कि जो कभी-कभी उस कुर्सी को भी हिला सकने में समर्थ होती थीं, और वह कभी विक्षुब्ध नहीं हुए।

मान्यवर, यह उनकी बहुत बड़ी महानता हुई और उस कुर्सी पर बठकर उन्होंने जो निर्देश दिए, वह प्रेरणा, सादगी, विनम्रता ,विद्वता समाज को आगे बढ़ा सकती है मान्यवर, स्वर्गीय आत्माराम गोविन्द खेर ऐसे व्यक्तित्व के थ कि जब भी कोई जटिल से जटिल प्रश्न इस सदन के सामने आया और वह प्रश्न ऐसे थे कि पहले जो इस सम्बन्ध में रूलिंग्स जो कुछ हो चुकी थीं, लेकिन अगर वह रूलिंग्स सदन की उस समय की मर्यादा और गौरव को देखने में और लोकतांत्रिक प्रणाली को उन मर्यादा को कायम करने में उस हद तक सक्षम न बन सकीं, तो उन्होंने ऐसी रूलिंग्स इस सदन में दी कि वे लोग भी जो उनकी तरफ यह निगाह लगाए बैठे रहते थे कि अध्यक्ष क्या निर्देश देते हैं, क्या रूलिंग देते हैं, वह भी सन्तुष्ट हो कर गये। मान्यवर, ऐसे लोगों के चले जाने से यह उत्तर प्रदेश की विधान सभा ही नहीं दुखी है बल्कि पूरा देश दुःखी है। मान्यवर, कुछ ऐसा सोचने और समझने में आ रहा है कि अगर उन मान्यताओं का उन मर्यादाओं का आगे आने वाली पीढ़ियां आदरतापूर्वक निर्वहन न कर सकेंगी, तो यह लोकतांत्रिक प्रणाली पर एक चोट होगी। मान्यवर, ऐसे व्यक्ति के निधन पर म स्वयं और अपनी पार्टी की ओर से निवेदन करता हूं कि मेरी शोक सम्वेदना के शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे मान्यवर, मैं यह कहना चाहूंगा कि हम सब लोग जो इस लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए कटिबद्ध हैं, उसको कायम रखने के लिए हम उनसे सबक लेकर ऐसा काम करें ताकि दिन प्रति दिन यह लोकतांत्रिक प्रणाली सुदृढ़ रहे।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

मान्यवर, स्वर्गीय आत्मा राम गोविन्द खेर के सम्बन्ध में अभी नेता सदन और नेता विरोधी दल ने अपने शोकोद्गार व्यक्त किए, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, स्वर्गीय श्री आत्माराम गोविन्द खेर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इस प्रदेश में उन्होंने अपने जीवन-काल में कुछ समय के लिए मन्त्री पद को भी सुशोभित किया और एक अच्छे प्रशासक के नाते अच्छी ख्याति अर्जित किया। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इस सदन के अध्यक्ष पद को उस समय सुशोभित किया जब हमारे देश का वर्तमान संविधान थोड़े दिन पहले स्वीकार किया गया था। उस समय हमारे सदन की नियमावली भी इतनी पुष्ट नहीं थी। उन्होंने अपनी अच्छी व्यवस्थाओं से जिस ढंग से इस आदरणीय सदन का कार्य-संचालन किया, नीति निर्देशक तत्व प्रदर्शित किया, वह सदा मार्ग-दर्शन करते रहेंगे। श्री खेर बहुत ही अच्छे ढंग से और सहृदयता के साथ सदन का कार्य संचालन करते थे। उन्होंने जिस मधुर व्यवहार का प्रदर्शन किया, आज हमारे बीच में न होने के कारण पूरे प्रदेश को बहुत बड़ी क्षति हुई है। मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से स्वर्गीय श्री खेर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करूंगा कि हमारी भावनाएं उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दी जायं।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव—

माननीय श्री आत्मा राम गोविन्द खेर के निधन पर जो भावनाएं माननीय नेता, सदन एवं अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किया है, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करूंगा कि हमारे जो श्रद्धांजलि के शब्द हैं उन भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। श्री आत्मा राम गोविन्द खेर ने जो व्यवस्थाएं इस सदन में दी हैं वह आने वाले समय में माननीय सदस्यों के लिए और जो भी उस स्थान को ग्रहण करेंगे, उनके लिए प्ररणा के रूप में रहेंगी। अक्सर ऐसे अवसर पड़ते हैं जब हम लोगों को लाइब्रेरी में उन व्यवस्थाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। उसी विचार से हम कहते हैं कि किस समय में वह ऐसी व्यवस्थाएं दिए थे कि जिससे पूरा सदन सन्तुष्ट होता था और सत्ता और विपक्ष यह समझता था कि हमारे साथ न्याय हो रहा है। जैसा मैंने कहा कृपया हमारी सम्वेदना को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री भीखा लाल—

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री आत्माराम गोविन्द खेर के सम्बन्ध में जो विचार नेता, सदन और अन्य नेताओं ने व्यक्त किया है मैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

स्वर्गीय श्री खेर जिस समय इस सदन में अध्यक्ष पद पर आसीन थे उस समय हमें भी कार्य करने का अवसर मिला। उस समय कभी-कभी सदन में ऐसी तनाव की स्थिति पैदा हो जाती थी कि सदस्यगण अपना सन्तुलन खो देते थे किन्तु श्री खेर कभी भी अपना धैर्य नहीं खोते थें, बल्कि बड़े ही मधुर रूप में सदन का काम चलाते थे और कामयाबी हासिल करते थ। उन्होंने जो व्यवस्थाएं दी हैं वह इस कुर्सी पर जो भी बैठेगा उसके लिए आदर्श के रूप में होगा, उनके निधन से हमारे प्रदेश की बहुत क्षति हुई है। मैं स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करूंगा कि हमारी भावनाएं उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दी जायें।

श्री रियासत हुसैन—

श्रीमन्, स्वर्गीय श्री आत्माराम गोविन्द खेर के सम्बन्ध में नेता सदन और अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं मैं अपने को और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, खेर साहब की अध्यक्षता में मुझे काफी समय तक यहां माननीय सदन में काम

[श्री रियासत हुसैन--]
करने का मौका मिला है। तो मैंने 2-3 बात उनमें विशेष रूप से पाई। एक तो उनमें बड़प्पन था। इस सिलसिले में मुझे याद है कि जब एक बार हाउस में अव्यवस्था फैली तो उन्होंने सारे ही विरोधी पक्ष के सदस्यों को सदन से बाहर निकाल दिया और फिर उनको एहसास हुआ कि इस सारे विरोधी पक्ष में कुछ ऐसे लोग चले गये जो बहुत व्यवस्थित रूप से बैठं थे। तो उन्होंने स्वयं फिर अध्यक्ष पद से कहा कि यह एक ऐसी बात हो गयी जो नहीं होनी चाहिए थी तो फिर उन्होंने इस चीज को एहसास किया और माननीय सदन से कहा कि वह लोग वापस आ जायं जिन्होंने अव्यवस्था नहीं फैलायी थी।

इसलिए उन्होंने यह बात बिना किसी के कहे हुए कही थी जोकि उनके बड़प्पन की निशानी है। उनकी दूसरी बात जो प्रजातन्त्र और सदन के साथ जुड़ी है वह ऐतिहासिक रूलिंग है जो उन्होंने अध्यक्ष की हैसियत से दिया था। इस सम्बन्ध में मैं एक बात कहना चाहता हूं कि इस माननीय सदन में जरा-जरा सी बात पर पुलिस बुला ली जाती थी लेकिन स्वर्गीय खेर साहब की देन है कि इस तरह की व्यवस्था हुई कि एक बार जब अव्यवस्था फैली तो एक समिति गठित करने की बात हुई तो समिति का गठन किया गया और उसने निर्णय लिया उनके आधार पर यहां सदन में पुलिस का आना बन्द हुआ और गार्डों की व्यवस्था की गयी। इसी तरह आज सदन देख रहा है कि राष्ट्रीयध्वज सबसे ऊपर लगा हुआ है जबकि उसके पहले राष्ट्रीय-ध्वज यहां दायें बायें लगा था लेकिन यहां प्रश्न उठा और फिर उस पर समिति गठित हुई जिसने निर्णय लिया कि राष्ट्रीय-ध्वज ऊपर लगना चाहिए, तो आज यह उन्हीं की देन है।

इस प्रकार उन्होंने बाहर रह कर समाज की सेवा की, मन्त्री पद पर रहकर जनता की सेवा और अध्यक्ष पद पर रहकर उन्होंने इस माननीय सदन की सेवा किया ह। उनकी सेवा करने का ढंग हमेशा अनोखा रहा है और उनकी सेवाएं आज भी और आगे भी रूलिंग के रूप में कोट करते रहे हैं और करते रहेंगे। इसी तरह उनके द्वारा दिए गय निर्णय भी कोट होते रहेंगे। इस प्रकार उन्होंने जो सेवा किया ह वह भुलाई नही जा सकती है। इसलिए एक बार पुनः फिर श्रद्धांजलि उनको अर्पित करता हूं और उनके दुखित परिवार को हमारी और हमारे दल की ओर से श्रद्धांजलि के पुष्प सदन उन तक पहुंचान की कृपा करे।

श्री राम आसरे वर्मा--

मान्यवर, माननीय खेर साहब के बारे में जो उद्गार माननीय नेता सदन और माननीय उप नेता विरोधी दल एवं अन्य नेताओं ने व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को और अपन प्रगतिशील विधायक दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, खेर साहब के सन्निकट में रहने का मुझे सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ लेकिन उनकी सादगी, साहस और उनकी विद्वता की कहानी अवश्य सुनने को मिलती रही है। मान्यवर, अध्यक्ष-पीठ से जो व्यवस्थाएं और निर्देश उन्होंने दिए हैं वह संसदीय परम्परा के इतिहास की एक कड़ी बन गयी है। इतना कहते हुए मैं अपनी ओर से और अपने प्रगतिशील विधायक दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी ओर से श्रद्धांजलि के पुष्प उनके शोक सन्तप्त परिवार तक और उनके प्रियजनों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष--

स्वर्गीय खेर साहब के सम्बन्ध में जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता लोक दल तथा अन्य सभी दलों के नेतागण ने व्यक्त किए हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय खेर साहब एक बहुत लम्बे राजनैतिक, सामाजिक जीवन को बिता कर हमसे अलग हुए। उन्होंने अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद 1919 में वकालत प्रारम्भ की और तभी से वह इस देश की आजादी की लड़ाई से जुट गए। उसमें अनेकों बार वह जेल गये और सर्वप्रथम 1937 में वह विधान सभा के सदस्य के रूप में यहां आये। उसके

बाद 1952 में 1967 तथा 1969 में भी वह विधान सभा के सदस्य चुने गये । संसदीय सचिव के रूप में और मन्त्री के रूप में भी खर साहब ने अपनी योग्यता का प्रमाण दिया और 15 वर्षों तक विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंनें इस प्रदेश में कार्य किया। मैंने जानने की कोशिश की थी तो इससे अधिक लम्बे समय तक विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने में भारतवर्ष में किसी और का नाम सामने नहीं आया।

इस तरह से उन्होंने इस प्रान्त के राजनैतिक जीवन में और संसदीय जीवन में बहुत अधिक सक्रिय रूप से प्रभावित किया। उनका स्वभाव और उनकी कार्य प्रणाली तथा वेशभूषा और भारतीय संस्कृति के प्रति उनको जो लगन थी और जिस तरह से उसमें वह अपने को लगाए रहे थे वह ऐसी बात नहीं है जो किसी से बताने की हो वह अपने आप उजागर है। ऐसे व्यक्ति के निधन से सब को अपार दुख और सम्वेदना है । वह अपने पीछे एक भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके परिवार के लिए, जो आपकी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है, जो आपने सम्वेदना व्यक्त की है, और जो मेरी तरफ से श्रद्धांजलि है उसको मैं उनके शोक सन्तप्त परिवार तक भिजवा दूंगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति मिले। अब हम लोग 2 मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिए मौन खड़ हुए।)

आज सदन की बैठक स्थगित किये जाने की सूचना

श्री अध्यक्ष—

यह सभी नेताओं की बैठक में भी तय हुआ था और सबकी सहमति से अब आज स्व0 खेर साहब के सम्मान में यह सदन स्थगित किया जाता है। अब 18 तारीख को 11 बज हम फिर बैठेंग ।

(इसके बाद सदन 1 बजकर 29 मिनट पर सोमवार, 18 जनवरी, 1982 के दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया ।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
15 जनवरी, 1982

नत्थी 'क'

(देखिए पीछे पृष्ठ 6 पर)

माननीय सदस्यगण,

वर्ष 1982 के प्रथम सत्र के अवसर पर नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं। आपको सम्बोधित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

मेरी सरकार प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन श्रमिकों, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के हित की रक्षा, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार और समाज के निर्बल वर्ग के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर को गरीबी की सीमा से ऊपर उठाने के लिए कटिबद्ध है। शासन की घोषित नीतियों के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों के कमजोर तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े परिवारों को यथाशीघ्र सामाजिक सुरक्षा एवं आर्थिक सहायता प्रदान करके उन्हें स्वावलम्बी, प्रगतिशील नागरिक बनाने एवं ग्रामीण अंचलों में बेरोजगारी को दूर करने व कृषकों को लघु सिंचाई की अधिकाधिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय भवनों के निर्माण की योजना के अन्तर्गत सितम्बर, 1981 तक उन्तीस हजार से अधिक भवन लाभार्थियों के लिए पूर्ण रूप से निर्मित हो चुके हैं और आशा है कि वर्तमान वित्तीय वर्ष के अन्त तक इस योजना के अधीन पैंतालिस हजार से अधिक आवासीय भवनों का निर्माण कार्य पूर्ण हो जायेगा। लघु सिंचाई योजना के माध्यम से सीमान्त लघु कृषकों को लघु सिंचाई के विभिन्न साधनों से विकास हेतु अनुदान देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। मेरी सरकार ने दिसम्बर, 1980 से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना प्रारम्भ की है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और अतिरिक्त आय का अवसर प्रदान करना तथा सामुदायिक लाभ की स्थाई सृजन परिसम्पत्ति सृजित करना है। वर्ष 1981-82 से इस योजना को छठी पंचवर्षीय योजना का अंग मानकर कार्य किया जा रहा है ताकि अधिकाधिक सफलता प्राप्त हो सके। शासन द्वारा प्रदेश में अभी तक 892 पंचायत उद्योग स्थापित किए जा चुके हैं। इन उद्योगों के माध्यम से आगामी वर्ष में पांच करोड़ रुपए का वार्षिक उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

प्रदेश में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ी जातियों तथा समाज के दुर्बल वर्ग के व्यक्तियों को गांव सभा तथा सीलिंग की आवंटित भूमि का वास्तविक कब्जा न मिलने की शिकायतें प्राप्त होने पर एक विशेष "कब्जा दिलाओ अभियान" प्रारम्भ किया गया। आवंटित भूमि से अनधिकृत कब्जा हटाने के लिए विधिक प्राविधानों में संशोधन भी किया गया है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों की आवंटित भूमि पर दुबारा अनधिकृत कब्जा करने वालों के लिए तीन वर्ष तक कारावास और जुर्माने की व्यवस्था की गयी है। प्रदेश में भूमि सुधार सम्बन्धी कार्यों की समीक्षा करने तथा भूमि सुधार से सम्बन्धित नीतियों के निर्धारण में सुझाव देने हेतु उत्तर प्रदेश भूमि सुधार समिति का गठन किया गया है।

मेरी सरकार अनुसूचित जातियों के उत्थान एवं आर्थिक विकास के लिए विशेष कम्पोनेन्ट प्लान की योजना चला रही है। इस योजना के द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना काल में लगभग पन्द्रह लाख परिवारों को निर्धनता रेखा से ऊपर उठाने का लक्ष्य है। शासकीय सेवाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शासन ने यह निर्णय लिया है कि यदि किसी चयन विशेष में आरक्षित रिक्तियों तक उपयुक्त अभ्यर्थी चयनित नहीं हो पाते हैं तो उस चयन के क्रम में एक समिति चयन केवल उक्त वर्गों के अभ्यर्थियों के लिए किया जाय जिससे वांछित रिक्तियां इस प्रकार के अभ्यर्थियों से ही भरी जा सकें। सरकार के इन प्रयासों के फलस्वरूप सरकारी सेवाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति के निर्धारित कोटे में सन्तोषजनक प्रगति हुई है।

मेरी सरकार का दृढ़ विश्वास है कि समाज के उत्थान के लिए चौबीस सूत्रीय कार्यक्रम नितान्त आवश्यक है। सरकार इस कार्यक्रम के सफल निष्पादन हेतु कटिबद्ध है। इस कार्य के सुव्यवस्थित सम्पादन तथा निर्देशन हेतु एक राज्य स्तरीय समिति का गठन किया गया है। जिला स्तर पर कार्य के प्रभावी तथा समयबद्ध ढंग से कार्यान्वयन हेतु जिला स्तरीय समितियों का भी गठन किया गया है। कार्यक्रम के सूत्रों के कार्यान्वयन के मूल्यांकन की भी व्यवस्था की गयी है।

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए सड़कों तथा पुलों के निर्माण का विशेष महत्व है। सड़कों के विषय में प्रदेश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए मेरी सरकार यत्न प्रयत्नशील है। गांवों की दशा में सुधार लाने के लिए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्थानीय आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए सड़कों और पुलों के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इन क्षेत्रों को सम्पर्क मार्गों द्वारा मुख्य मार्गों से जोड़ने की उचित व्यवस्था की जा रही है।

वर्ष 1981–82 में 1100 किलोमीटर नए मार्गों का निर्माण तथा 1000 किलोमीटर मार्गों का पुनर्निर्माण पूर्ण कराया जा चुका है। यह भी उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश राज्य निर्माण निगम लीबिया में भवनों के निर्माण का कार्य कर रहा है। उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम ईराक में 43 करोड़ रुपए की लागत से 13 सेतुओं का निर्माण कार्य कर रहा है। उनके कार्य की विदेशों में सराहना की गयी है। उक्त दोनों निगमों का कार्य अन्य देशों में भी फैलाया जा रहा है। औसतन सप्ताह में एक पुल तैयार किया जा रहा है और 34 बड़े सेतुओं का निर्माण पूरा किया जा चुका है।

राज्य में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने में जनता का बहुत सराहनीय सहयोग रहा है। आपसी प्रेम व सौहार्द के साथ विभिन्न धर्मावलम्बियों द्वारा त्योहार मनाए गये। अध्यापकों और विद्यार्थियों के योगदान से परीक्षाएं सफलतापूर्वक सम्पादित हुयीं। आमतौर पर श्रम सम्बन्ध मधुर रहे हैं और कृषकों के हितों की पूरी रक्षा की गयी है। निर्बल वर्ग के प्रति अत्याचार को समाप्त करने और साम्प्रदायिकता को नष्ट करने के लिए मेरी सरकार कटिबद्ध है। डकैतों एवं समाज विरोधी तत्वों के विरुद्ध कारगर कदम उठाए गये। एक हजार से अधिक कुख्यात डाकू मारे गए और बहुत बड़ी संख्या में बन्दी बनाए गये। भारी मात्रा में अवैध आग्नेयास्त्र व कारतूस बरामद किए गये। अन्य अपराधिक तत्वों के विरुद्ध भी प्रभावशाली कार्यवाही की गयी। जिससे अपराधों की संख्या में उल्लेखनीय कमी हुई। जिन परिवारों एवं व्यक्तियों को असामाजिक तत्वों द्वारा धन-जन की हानि पहुंचाई गयी उनके प्रति हमारी हार्दिक सम्वेदना है। उनके आंसुओं को दुष्टदलन के संकल्प द्वारा पोछने का प्रयास जारी रहेगा। इस अभियान में अनेकों पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बलिदान दिया तथा घायल हुए। शासन ने उनके आश्रितों को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की है और कुछ अन्य सुविधाओं को देने का भी निर्णय लिया है।

मेरी सरकार ने समाज के निर्बल वर्गों के व्यक्तियों को निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराने के लिए प्रदेशीय स्तर पर एक कानूनी सहायता एवं परामर्श परिषद् का गठन किया है। अड़तालिस जिलों में तथा दो तहसील मुख्यालयों पर कानूनी सहायता समितियां गठित की गयी हैं। विगत वर्ष में कानूनी सहायता शिविरों का आयोजन किया गया। शिविर स्थल पर ही छत्तीस सौ से अधिक विधिक मामलों का निस्तारण किया गया और इससे वादकारी जनता के श्रम, समय तथा व्यय की बचत हुई। आगामी वर्षों में इस कार्यक्रम में और तीव्रता लाई जायगी। डकैती प्रभावित बारह जिलों में विशेष न्यायालय स्थापति किए गये हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश में आर्थिक अपराधों के मामलों के निस्तारण हेतु पचास जिलों में विशेष न्यायालयों की स्थापना की गयी है। उत्तरकाशी में जिला जज का न्यायालय स्थापित कर दिया गया है।

देश में खाद्यान्नों के उत्पादन में हमारे प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हर्ष का विषय है कि पिछले वर्ष प्रदेश में 244 लाख 96 हजार टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ जो प्रदेश के इतिहास में सर्वाधिक है। दैवी आपदाओं के बावजूद खरीफ की फसल अपेक्षाकृत अच्छी रही। दलहनी व तिलहनी फसलों के महत्व को देखते हुए उनके उत्पादन पर विशेष बल दिया जा रहा है।

कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए अधिकाधिक सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। समानान्तर निचली गंगा नहर तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में औगासी पम्प नहर से सिंचाई कार्य प्रारम्भ हो गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चार नई बंधियां स्वीकृत की गयी हैं। नलकूपों की मरम्मत एवं रख-रखाव का विशेष अभियान चलाया गया, जिसके फलस्वरूप उनकी सिंचन क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हुई। विश्व बैंक की सहायता से पाइलट प्रोजक्ट के रूप में चलाई गयी पांच सौ नलकूपों की योजना इस वर्ष के अन्त तक पूर्ण हो जाने की आशा है। इस योजना की सफलता को देखते हुए मेरी सरकार ने लगभग 4,500 नलकूपों की एक बहुत बृहद योजना विश्व बैंक से सहायता प्राप्त करने हेतु भारत सरकार को प्रस्तुत की है।

आपको विदित है कि गत वर्ष वर्षा की कमी के कारण रिहन्द, रामगंगा इत्यादि जलाशयों में जल-स्तर बहुत कम रहा। फलस्वरूप जल-विद्युत् के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। तथापि तापीय विद्युत् के उत्पादन में सुधार कर ग्रामीण अंचलों में यथासम्भव बिजली की आपूर्ति की जा रही है। उद्योगों में की गयी बिजली की कटौती में भी कमी की गयी। मेरी सरकार आगामी वर्ष में विद्युत् विकास हेतु विद्युत् उत्पादन में वृद्धि नई लाइनों का निर्माण करने, ग्रामीण विद्युतीकरण में तेजी लाने एवं हरिजन बस्तियों और निजी नलकूपों तथा पम्प सेटों को अधिकाधिक बिजली उपलब्ध कराने के लिए ने कृत संकल्प है। इस समय पारीक्षा (झांसी), टांडा (फैजाबाद), आनपारा (मिर्जापुर) तथा ऊंचाहार (रायबरेली) में तापीय परियोजनाओं एवं खोदरी, मनेरी माली एवं कई अन्य परियोजनाओं पर निर्माण कार्य प्रगति पर है। आनपारा तापीय विद्युत् गृह के निर्माण के अन्तर्गत 500 मेगावाट की दो इकाइयों की स्वीकृत अभी हाल ही में भारत सरकार से प्राप्त हुई है। मेरी सरकार द्वारा आगामी वर्ष में बिजली की कमी के परिपेक्ष्य में केन्द्रीय सरकार के विचाराधीन 3,600 मेगावाट की पांच तापीय परियोजनाओं एवं 1525 मेगावाट की पांच जलीय परियोजनाओं की स्वीकृति शीघ्र प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सहकारी संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जा रही है। आलू की उपज को सुरक्षित रखने की सुविधा सहकारी क्षेत्र में स्थापित 47 शीतगृहों में उपलब्ध है जिसके फलस्वरूप आलू के क्षेत्रफल में पर्याप्त वृद्धि हुई है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत न्याय पंचायत स्तरीय समितियों द्वारा दस हजार से ऊपर सस्ते गल्ले की दुकानें संचालित की जा रही हैं और इस योजना के क्रियान्वयन से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में चीनी एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता में विशेष सुधार हुआ है।

यह हर्ष का विषय है कि मेरी सरकार खाद्यान्नों की उपलब्धता बनाए रखने में सफल रही है। प्रदेश में डीजल की उपलब्धता एवं उचित वितरण व्यवस्था को बनाये रखने के लिए प्रभावकारी कदम उठाए गये ह। किसानों से सीधे धान की खरीद तथा उन्हें उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से लगभग 1000 सेन्टर खोले गए हैं। प्रदेश में लगभग पांच लाख टन चावल की खरीद की गयी है जोकि पिछले वर्ष की खरीद से लगभग एक लाख पैंतीस हजार टन अधिक है। प्रदेश में सस्ते गल्ले की दुकानों के माध्यम से 41,767 टन चीनी बांटी जा रही है। यह आदेश दिए गये है कि अब किसी भी महीने का कोटा उपभोक्ता के लिए दो महीने तक व्यपगत नहीं होगा। खुले बाजार में गुड़ के थोक दाम गिरे है, जिस से आम जनता को राहत मिली है।

प्रदेश के पिछड़ेपन को दूर करने और बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने के लिए प्रदेश के औद्योगीकरण में तीव्रता लाना नितान्त आवश्यक है। मेरी सरकार ने इस दिशा में एक संकलित नीति अपनाई है जिसके अन्तर्गत एक ओर भारी, मध्यम तथा लघु लघुतर और ग्रामीण उद्योगों के विकास के लिए विशेष बल दिया जा रहा है तथा दूसरी ओर पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगीकरण की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उद्यमियों को एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के उद्देश्य से शासन स्तर पर एक उच्चस्तरीय समिति गठित की गयी है। इसकी सफलता को देखते हुए लघु उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए उद्योग निदेशालय में एक "उद्योग बन्धु" कोष्ठक स्थापित किया गया है। शासन के प्रयासों के फलस्वरूप केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रदेश में एक हजार छः सौ करोड़ रुपए की लागत के चार उर्वरक कारखानें स्वीकृत किए गये हैं। छठीं योजना काल में प्रदेश के निजी, सहकारी, सार्वजनिक एवं संयुक्त क्षत्र म लगभग चार हजार करोड़ रुपए की पूंजी का विनियोजन किया जायगा। मेरी सरकार ने प्रदेश के पिछड़ क्षेत्रों में औद्योगीकरण के लिए प्रत्येक जनपद में कम से कम एक बड़ा उद्योग स्थापित किए जाने की नीति अपनाई है।

मेरी सरकार बुनकरों की दशा सुधारने के लिए सदैव प्रयत्नशील है। हथकरघा वस्त्रों के उत्पादन में वद्धि के लिए जिला स्तर पर धाग की आपूर्ति हेतु बुनकर सघन क्षेत्रों में जिला बुनकर फेडरेशन की स्थापना का नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के बुनकरों को पर्याप्त मात्रा में सूत की आपूर्ति हेतु सार्वजनिक क्षेत्रों में वर्तमान आठ कताई मिलों की क्षमता में वृद्धि करने के साथ-साथ पांच नई कताई मिलों की स्थापना की जा रही है तथा सहकारिता क्षेत्रों में सात कताई मिलों की स्थापना का कार्य प्रगति पर है।

प्रदेश में चीनी उद्योग के महत्व को ध्यान में रखते हुए तथा प्रदेश के गन्ना किसानों के हितों को सर्वोपरि मानते हुए, मेरी सरकार गन्ने की खेती और चीनी उद्योग के विकास के लिए सराहनीय कार्य कर रही है। शासन द्वारा एक ओर गन्ना किसानों को लाभकारी गन्ना मूल्य दिलाया गया। दूसरी ओर गन्ने के विकास तथा अनुसन्धान के कार्यक्रमों को नई दशा प्रदान की गयी। वर्ष 1979–80 में 155.31 करोड़ रुपए गन्ना मूल्य के रूप में देय था। इसमें से 29 फरवरी, 1980 को 23.88 करोड़ रुपए बकाया था, जो 30 नवम्बर, 1981 को घटकर 13 लाख रुपए रह गया है। इस प्रकार वर्ष 1979–80 की बकाया का एक प्रमुख भाग मेरी सरकार के प्रयासों से समाप्त किया जा सका है। वर्ष 1980–81 में गन्ना का मूल्य 286.81 करोड़ रुपए देय था, उसमें 286.53 करोड़ रुपए का भुगतान हो चुका है। इस वर्ष भी तत्परता से भुगतान की व्यवस्था की जा रही है। यह भी प्रशंसनीय है कि वर्ष 1979–80 के लगभग 155 करोड़ की तुलना में वर्ष 1980-81 में 286 करोड़ रुपए अधिक से गन्ना का मूल्य दिया गया जो पहले के वर्ष की तुलना में 131 करोड़ अधिक था। इससे किसानों को बहुत लाभ हुआ। पांचवीं पंचवर्षीय योजना-काल में स्वीकृत तीन सहकारी चीनी मिलों के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। छठी पंचवर्षीय योजन काल में सहकारी क्षेत्र में पांच नई चीनी मिलों की स्थापना का काय प्रारम्भ किया गया है और सहकारी क्षेत्र की कुछ चीनी मिलों की क्षमता के विस्तार का कार्यक्रम भी कार्यान्वित किया जा रहा है।

मेरी सरकार शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने तथा शिक्षकों के कल्याण के लिए सतत् प्रयत्नशील है। प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अध्यापकों के चयन हेतु शिक्षा सेवा आयोगों एवं चयन बोर्डों के गठन के लिए आवश्यक कार्यवाही की जा रही है जिससे योग्य अध्यापकों का स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं उत्कृष्ट चयन हो सकेगा। प्रदेश में दो वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के स्थान पर तीन वर्षीय पाठ्यक्रम लागू करने के लिए गठित उप समिति की रिपोर्ट प्राप्त हो गयी है और उसके सम्बन्ध में शीघ्र निणय लिया

जायगा। प्राच्य शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए शासन न सर्वोत्तम पुस्तक पर एक लाख रुपए का पुरस्कार देने का निर्णय लिया हैं। उर्दू के विकास के लिए सरकार सतत् प्रयास कर रही है। अध्यापकों को पेंशन व मकान किराया भत्ता दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

पिछड़ी जातियों के दशमोत्तर छात्रों को शैक्षिक सुविधाएं प्रदान किए जाने के प्रकरण में शासन ने वर्ष 1981-82 से पिछड़ी जातियों के छात्रों को लगभग 4 करोड़ रुपए की स्वीकृति निर्गत कर दी है और 2 करोड़ रुपए सामान्य वर्ग के ऐसे छात्रों को दिए जाने का निर्णय लिया है जिनकी आर्थिक दशा अत्यन्त पिछड़ी हुई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने "2,000 ई0 तक सबके लिए स्वास्थ्य" की उद्घोषणा की है। इसे मेरी सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के रूप में स्वीकार किया है। इस उद्देश्य से न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वास्थ्य सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराने के लिए शासन प्रयत्नशील है। जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम पूर्णतया स्वैच्छिक रूप से चलाया जा रहा है और नवीनतम तकनीक को प्रयोग में लाकर परिवार नियोजन के सरल साधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। शासन द्वारा संजय गांधी इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज, लखनऊ के प्रोजेक्ट का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।

योजना संरचना की वर्तमान प्रक्रिया में इस आंशय से मौलिक परिवर्तन करने की आवश्यकता बहुत समय से अनुभव की जाती रही है कि प्रदेश की योजनाकों की संरचना नीचे से उभर कर आये। तद्नुसार आगामी वर्ष 1982-83 की योजना विकेन्द्रित आधार पर जन-प्रतिनिधियों के परामर्श से तैयार की गई है। प्रत्येक जनपद को जिला सेक्टर योजनाओं हेतु उनका परिव्यय इंगित कर दिया गया है और उनसे अपेक्षा की गयी है कि वे इस परिव्यय के आधार पर जिला योजनाएं तैयार करें। इस प्रकार वस्तुतः पहली बार जनपदों की योजनाएं प्रदेश की आगामी वर्ष 1982-83 की योजना का आधार बनी। मुझे विश्वास है कि अपेक्षित जन सहयोग से विकेन्द्रित नियोजन का यह प्रयोग सफल होगा। योजनाओं के मूल्यांकन की व्यवस्था जिला, मण्डल एवं राज्य स्तर पर की गयी है।

प्रदेश के बहुमुखी विकास से सम्बन्धित अनेक विकास योजनाकों को संस्थागत वित्त उपलब्ध कराने कायप्रयास जारी है। वर्ष 1982 के लिए प्रदेश में कार्यरत लीड बैंकों द्वारा जिला ऋण योजनाएं तैयार की जा चुकी हैं। इसमें गरीबी रेखा से नीचे जीवन-निर्वाह कर रही व्यक्तियों को ऊपर उठाने के लिए वित्तीय सहायता सुलभ कराये जाने पर विशेष बल दिया गया है। आर्थिक विकास कार्यक्रम में लाभार्थियों को बैंकों से शीघ्रता से ऋण उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश में क्रेडिट कैम्पों का व्यापक कार्यक्रम चलाया गया ह।

मेरी सरकार ने राज्यकर्मचारियों, स्थानीय निकायों के कर्मचारियों और सहायता प्राप्त शिक्षण एवं प्राविधिक संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए गठित वेतन आयोगों की संस्तुतियों पर अपना निर्णय घोषित कर दिया है और उन्हें कार्यान्वित करने की दिशा में विभिन्न विभागों द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। इसके फलस्वरूप लहेभग छः लाख तिहत्तर हजार राज्य कर्मचारी एवं चार लाख से अधिक सहायता प्राप्त शिक्षण तथा प्राविधिक संस्थाओं के कर्मचारी एवं एक लाख से ऊपर स्थानीय निकायों के कर्मचारी तथा लगभग डेढ़ लाख सेवा निवृत्त कर्मचारी लाभान्वित होंगे।

नगरों और ग्रामीण अंचलों की आवासीय समस्या को सुलझाने के लिए सतत् प्रयास किया जा रहा है। आवास योजनाओं के कार्यन्वयन में उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद् तथा विकास प्राधिकरण महत्व पूर्ण योगदान दे रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग लिए समुचित आवासों, भूखण्डों और दूकानों के आरक्षित आवंटन की नीति कार्यान्वित

की जा रही है । आवास समस्या को सहकारिता के माध्यम से सुलझाने के लिए भी प्रयत्न जारी हैं। शासन ने उत्तर प्रदेश सहकारी आवास संघ को स्टैम्प ड्यूटी से मुक्त कर दिया है। भारतीय जीवन बीमा निगम तथा साधारण जीवन बीमा निगम से ऋण प्राप्त कर मकानों के निर्माण का प्रयास किया जा रहा है। विश्व बैंक की सहायता से कानपुर में मलिन बस्तियों के और नगरीय सुधार हेतु 45 करोड़ रुपए की योजना का कार्य तीव्र गति पर है। आशा है कि यह योजना 1985 तक पूर्ण हो जायगी। नगरों एवं ग्रामीण अंचलों में शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराने के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं ।

यह हर्ष का विषय है कि वर्ष 1981 में प्रदेश की श्रम स्थिति सन्तोषजनक रही । मेरी सरकार का यह विश्वास है कि औद्योगिक शान्ति तभी बनी रह सकती है जब सेवायोजक एवं श्रमिक, दोनों पक्ष, आपस में मिल बैठ कर विवादों का समाधान निकालें । यह प्रसन्नता की बात है कि इसी विचारधारा को ध्यान में रखते हुए अनेक अवसरों पर विवादित समस्याओं का द्विपक्षीय वार्ताओं, त्रिदलीय सम्मेलन तथा पंचनिर्णय द्वारा समाधान कराने का सफल प्रयास किया गया है । प्रदेश में पहली बार स्वच्छकारों और वन श्रमिकों की कार्य-दशाओं में सुधार तथा उनको कल्याण कारी योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये। 50,000 रुपए से अधिक की धनराशि जिन प्रतिष्ठानों में बाकी है उसे भू राजस्व के बकाया की तरह वसूल किया जायगा। प्रदेश में सहभागिता की योजना के अन्तर्गत दो सौ या उससे अधिक कर्मचारी नियोजित करने वाले राज्य के सार्वजनिक क्षेत्र के उत्पादनरत प्रतिष्ठानों में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व दिए जाने की सक्रिय कार्यवाही की जा रही है ।

मोटर गाड़ी अधिनियम के अन्तर्गत करों की अदायगी में जनता को सुविधा देने हेतु मोटर गाड़ियों से सम्बन्धित करों के एकीकरण पर शासन सक्रिय रूप से विचार कर रहा है। निजी सवारी गाड़ियों के परमिटों को उदारतापूर्वक वितरित करने के लिए भी आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम जनता को सस्ती एवं आराम-देह परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने में सतत प्रयत्नशील है ।

सरकार वनों के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिए कटिबद्ध है। आगामी वर्ष में 20 करोड़ पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा गया है और विश्व बैंक की सहायता से सामाजिक वानिकी योजना के अन्तर्गत लगभग चौदह हजार पांच सौ हेक्टेयर भूमि पर वृक्षारोपण किया जाना प्रस्तावित है ।

मेरी सरकार प्रदेश के पर्वतीय अंचलों के समग्र विकास के लिए कटिबद्ध है । इस कार्य में केन्द्रीय सरकार का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। पांचवीं पंचवर्षीय योजना में इंगित 200 करोड़ रुपए की विशेष केन्द्रीय सहायता की अपेक्षा छठी योजना अवधि में इस निमित्त 350 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्राप्त हुई है। विशेष केन्द्रीय सहायता अब 50 प्रतिशत अनुदान और 50 प्रतिशत ऋण के स्थान पर 90 प्रतिशत अनुदान तथा 10 प्रतिशत ऋण के रूप में होगी। समेकित जलग्रहण प्रबन्ध योजनाओं पर सहायता हेतु विश्व-बैंक की टीम द्वारा विचार किया जा रहा है । पर्वतीय क्षेत्र की योजनाओं के निरूपण, क्रियान्वयन आदि के लिए राज्य नियोजन संस्थान के अन्तर्गत पृथक प्रभाग स्थापित किया जा रहा है ।

माननीय सदस्यगण, मैंने आपके सम्मुख सरकार की प्रमुख नीतियों और उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों की संक्षिप्त रूपरेखा रखी है। वर्तमान सत्र में आपके सम्मुख वित्तीय वर्ष 1982–83 का आय-व्ययक भी प्रस्तुत किया जायेगा जिसे पारित करने की आपसे अपेक्षा की जायगी । इस बीच जब दोनों सदन सत्र में नहीं थे, मैंने कतिपय अध्यादेश प्रख्यापित किए थे। इनसे सम्बन्धित विधेयकों तथा अन्य महत्वपूर्ण विधेयक, जिनकी सूचना आपको अलग से दी जा चुकी है, आपके सम्मुख रखे जायेंगे ।

माननीय सदस्यगण, यह प्रदेश अपनी गौरवमयी परम्पराओं, राष्ट्रीय एकता तथा सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध रहा है। जनतंत्रीय प्रणाली मान्य परम्पराओं तथा मर्यादाओं पर आधारित है। राजनैतिक मतभेद के होते हुए भी शासन को अपना कार्य करने का अवसर प्रदान करना ही जन-तन्त्र का आधारशिला है। इस प्रदेश को आगे बढ़ाने का गुरुतर भार आपके कन्धों पर है। मुझे आशा है कि आप इस प्रदेश को समृद्धि की राह पर ले चलेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं आपको अपने कर्तव्यों के निर्वहन के लिए आहूत करता हूं।

जयहिन्द।

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

पी० एस० यू० पी० ओ०—हि० 313 वि० सभा (568)—1982—813।